Toppersnotes
Unleash the topper in you

1ST – ग्रेड

स्कूल व्याख्याता

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

प्रथम – प्रश्न पत्र

भाग – 5

राजस्थान का इतिहास, कला एवं संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

RPSC 1ST GRADE – 2021

राजस्थान का इतिहास, कला एवं संस्कृति

राजस्थान का इतिहास

1.	राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थल	1
2.	राजस्थान के गुर्जर प्रतिहार	6
3.	मेवाड का इतिहास	10
4.	जालौर एवं रणथम्भौर के चौहान	28
5.	राजस्थान में चौहान वंष	33
6.	राजस्थान एवं मुगल साम्राज्य	40
7.	1857 की क्रांति (राजस्थान)	48
8.	राजस्थान मे किसान आंदोलन	53
9.	राजस्थान में राजनीतिक जनजागरण	61
10.	राजस्थान का एकीकरण	66
11.	प्रजामण्डल	71

राजस्थान की कला एवं संस्कृति

1.	राजस्थान में दुर्ग, मंदिर एवं हवेलियाँ	78
2.	राजस्थान मे लोकदेवता	112
3.	राजस्थान में लोक देवियाँ	126
4.	राजस्थान के लोक संत	132
5.	राजस्थान के प्रमुख सम्प्रदाय	138
6.	राजस्थान के त्योहार	140

7.	आभूषण, वेशभूषा व खान - पान	152
8.	राजस्थान के प्रमुख लोकगीत	156
9.	राजस्थान की लोकगायन शैलियाँ	157
10.	राजस्थान के संगीत घराने	159
11.	राजस्थान के लोक नृत्य	161
12.	राजस्थान की चित्रकला	168
13.	राजस्थान का साहित्य	178
14.	राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ	185

राजस्थान का इतिहास

2. राजस्थान के गुर्जर प्रतिहार

- बादामी के चालुक्य शासक पुलकेशिन II का कर्नाटक से एक ऐहोल अभिलेख प्राप्त हुआ है इसकी भाषा संस्कृत है और रचनाकार रविकीर्ति है।
- ऐहोल अभिलेख के अनुसार पुलकेशिन II ने नर्मदा के किनारे हर्षवर्धन को पराजित किया था।

गुर्जर प्रतिहार/राजपूत काल/सामन्त काल (700–1200 ई.)

उत्पत्ति	संस्थापक	त्रिपक्षीय संघर्ष [2nd Grade 1st Paper - 2018]
1. पृथ्वीराज रासौ के अनुसार गुरू वशिष्ठ के अग्निकुण्ड से प्रतिहार, परमार, चालुक्य, चौहान उत्पन्न हुए	हरिश्चन्द्र (रोहलिद्धी)	
2. जेम्स टॉड के अनुसार खंजर जाति से विदेशी	पुत्र रज्जिल–राजधानी–मंडोर दह भोगभट्ट कदक	
3. हेनसांग के अनुसार गुर्जर–प्रतिहार क्षत्रिय थे।	शिलालेख – घटियाला शिलालेख	
4. मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में लक्ष्मण का अवतार बताया गया।		

- 647 ई. में हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद कन्नौज को प्राप्त करने के लिए पाल, प्रतिहार, राष्ट्रकूटों के मध्य त्रिपक्षीय संघर्ष लड़ा गया जिसमें कन्नौज अंतिम रूप से गुर्जर प्रतिहारों को प्राप्त हुआ।
- डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार गुर्जर एक भौगोलिक शब्दावली है जबकि प्रतिहार पद की जानकारी देता है जो कि राजा के महल के बाहर रक्षक का कार्य किया करते थे।
- हेनसांग ने गुर्जर प्रतिहारों के क्षेत्र को कु.चे.लो. व राजधानी को पीलोभोलो कहा है।

[2nd Grade 1st Paper - 2018]

- अरब यात्री अलमसूदी के गुर्जर प्रतिहारों के क्षेत्र के लिए अलगुर्जर, गुर्जर प्रतिहारों के लिए जुर्ज तथा राजा के लिए बौरा शब्द का प्रयोग किया है।
- डॉ. गौरीशंकर औझा के अनुसार गुर्जर–प्रतिहार शासक क्षत्रिय थे।
- मुंहणोत नैणसी के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएँ थी। जिसमें से 2 शाखा महत्त्वपूर्ण थी –
  1. मंडोर के गुर्जर–प्रतिहार
  2. भीनमाल के गुर्जर–प्रतिहार
- पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख से भी गुर्जर प्रतिहार शासकों के बारे में जानकारी मिलती है।

- **संस्थापक** – जोधपुर से प्राप्त घटियाला शिलालेख के अनुसार गुर्जर प्रतिहार वंश का संस्थापक हरिश्चन्द्र को माना जाता है। हरिश्चन्द्र के पुत्र रज्जिल ने मंडोर को अपनी राजधानी के रूप में स्थापित किया।
- **रज्जिल** – रज्जिल के द्वारा राजसूय यज्ञ का आयोजन किया गया। यह राजसूय यज्ञ राजा के राज्याभिषेक के अवसर पर किया जाता था। रज्जिल के दरबारी विद्वान नरहरी ने 'रज्जिल' को राजा की उपाधि दी है।
- **नरभट्ट** – नरभट्ट को गुरु व ब्राह्मणों का संरक्षक कहा गया है।
  हेनसांग ने नरभट्ट के लिए शब्द का प्रयोग किया है, जिसका अर्थ है – साहसिक कार्य करने वाला।
- नागभट्ट नामक व्यक्ति गुर्जर–प्रतिहार शासक बना। इसने अपनी राजधानी 'मंडोर' से मेड़ता स्थानान्तरित की थी। **[2nd Grade 1st Paper - 2016]**

भीनमाल (जालौर) के गुर्जर–प्रतिहार

यहाँ के शासकों ने स्वयं को रघुवंशी प्रतिहार कहा।

नागभट्ट प्रथम – 730 – 760 ई.

उपाधि – नागावलोक, मल्लेच्छों का नाशक, नारायण की मूर्ति का प्रतीक

[2nd Grade 1st Paper - 2019]

राजधानी – भीनमाल (जालौर)

- नागभट्ट प्रथम ने उज्जैन को अपनी दूसरी राजधानी के रूप में स्थापित किया जो कि शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र माना गया।
- उज्जैन में नागभट्ट I के द्वारा हिरण्य गर्भदान यज्ञ का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य पुत्र रत्न की प्राप्ति करना था।
- नागभट्ट प्रथम ने राष्ट्रकूट शासक दन्तिदुर्ग को भी इस यज्ञ के दौरान आमंत्रित किया था, अतः इस समय त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरूआत नहीं हुई थी।
- मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में नागभट्ट I को मलेच्छों का नाशक कहा गया।
- पुलकेशियन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में नागभट्ट I को गुर्जर प्रतिहारों का वास्तविक संस्थापक कहा गया।
- नागभट्ट प्रथम के बाद कक्कुल व देवराज गुर्जर प्रतिहार शासक बने।

वत्सराज – 783 – 95 ई.

उपाधि – रणहस्तिन (युद्ध का हाथी)
जयवराह – दुग्गल नामक ब्राह्मण के द्वारा दी गयी क्योंकि वत्सराज ने वैष्णव धर्म को संरक्षण प्रदान किया था।

- वत्सराज के काल में त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरूआत हुई।
- वत्सराज ने कन्नौज के शासक इन्द्रायुद्ध को पराजित करके कन्नौज पर अधिकार किया।
- बंगाल के शासक धर्मपाल को मुंगेर के युद्ध में पराजित किया, परन्तु वत्सराज राष्ट्रकूट शासक ध्रुव के हाथों पराजित हुआ।
  इस प्रकार वत्सराज के काल में कन्नौज पहली बार गुर्जर–प्रतिहारों को प्राप्त हुआ और वत्सराज के काल में कन्नौज गुर्जर प्रतिहारों के हाथों से निकल गया।
- वत्सराज के काल में गुर्जर प्रतिहारों का साम्राज्य विस्तार बंगाल तक हुआ।
- राष्ट्रकूट शासक ध्रुव ने अपनी उत्तर भारत विजय के उपलक्ष्य में गंगा व यमुना को अपने प्रतीक चिह्न के रूप में अपनाया था।

- वत्सराज के काल में संस्कृत भाषा में बली प्रबंध नामक लेख की रचना हुई जिसमें गुर्जर–प्रतिहार काल में प्रचलित सती प्रथा की जानकारी मिलती है।
- वत्सराज शैव मत का अनुयायी था। वत्सराज के काल में जोधपुर के औसियां नाम स्थान पर महावीर स्वामी के मंदिर का निर्माण हुआ। यह पश्चिमी भारत का सबसे प्राचीन जैन मंदिर माना जाता है। गुर्जर–प्रतिहार शासकों द्वारा महामारू शैली में मंदिरों का निर्माण करवाया गया था। महामारू शैली से तात्पर्य है – एक स्थान पर एक से ज्यादा मंदिरों का निर्माण।
- वत्सराज के काल में उद्योतन सूरी व जिनसेन सूरी नामक विद्वान हुए। उद्योतन सूरी के द्वारा "कुवलयमाला" तथा जिनसेन सूरी के द्वारा "हरिवंश पुराण" की रचना की गयी।

नागभट्ट द्वितीय (795–833 ई.)

- **उपाधि** – परमेश्वर, परमभट्टारक, महाराजाधिराज
- मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में नागभट्ट द्वितीय को कर्ण कहा गया। नागभट्ट द्वितीय के काल में त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ। इस समय राष्ट्रकूट शासक गोविन्द तृतीय था। गोविन्द तृतीय ने नागभट्ट द्वितीय को पराजित किया था।
- गोविन्द तृतीय को जब दक्षिण में व्यस्त था तब नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज पर आक्रमण करके चक्रायुद्ध को पराजित किया और कन्नौज में गुर्जर प्रतिहारों की एक शाखा स्थापित की थी। नागभट्ट द्वितीय ने बंगाल के शासक धर्मपाल को भी हराया था।
- नागभट्ट द्वितीय के काल में जोधपुर के बुचकला नामक स्थान पर शिव–पार्वती व विष्णु मंदिर का निर्माण हुआ।
- नागभट्ट द्वितीय के बारे में जानकारी चन्द्रप्रभुसूरी की पुस्तक प्रभावक चरित्र से प्राप्त होती है।
- नागभट्ट द्वितीय के द्वारा गंगा में समाधि ली गयी थी।

रामभद्र (833–36 ई.)

रामभद्र के काल में मंडोर के गुर्जर प्रतिहार स्वतंत्र होने लगे। बंगाल के पाल शासकों ने भी गुर्जर प्रतिहारों के क्षेत्र पर आक्रमण करना शुरू कर दिया। अतः रामभद्र की हत्या उसके पुत्र मिहिरभोज के द्वारा कर दी गयी। मिहिरभोज को गुर्जर प्रतिहार शासकों का पितृहन्ता कहा जाता है।

मिहिरभोज (836–855 ई.)

- **उपाधि** – आदिवराह (जयवराह की उपाधि वत्सराज ने धारण की थी)
  प्रभासपाटन
  संपूर्ण पृथ्वी का विजेता (बग्रमा अभिलेख, उत्तरप्रदेश)
- मिहिर – सूर्य का प्रतीक
- जानकारी के स्त्रोत
  - ग्वालियर अभिलेख (मध्यप्रदेश)
  - सागरताल प्रशस्ति (मध्यप्रदेश)
  - बग्रमा अभिलेख
- वैष्णव धर्म को संरक्षण दिये जाने के कारण आदिवराह की उपाधि ली जिसकी जानकारी ग्वालियर अभिलेख से प्राप्त होती है।
- मिहिरभोज ने राष्ट्रकूट शासक कृष्ण तृतीय को पराजित करके कन्नौज व मालवा पर अधिकार किया था।

10. राजस्थान का एकीकरण

- 18 जुलाई, 1947 को भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम ब्रिटिश संसद में पारित किया गया था। इस अधिनियम की सातवीं धारा के अनुसार देशी रिसायतों को भी स्वतंत्र कर दिया गया। वे यह निर्णय करने के लिए स्वतंत्र थे कि भारत या पाक में से किसी एक देश में अपनी रियासत का विलय कर सकते है अथवा स्वतंत्र रह सकते है।
- इस अधिनियम से पूर्व ही 5 जुलाई, 1947 को भारतीय रियासती विभाग का गठन किया गया था जिसके अध्यक्ष सरदार वल्लभ भाई पटेल और सचिव वी.पी. मेनन थे। ये तत्कालीन आई.सी.एस. अधिकारी थे।
- रियासती विभाग द्वारा किसी देशी राज्य के लिए भारतीय संघ का राज्य बनने के लिए निम्नलिखित शर्ते तय की गई–
  (1) न्यूनतम 10 लाख की जनसंख्या हो।
  (2) न्यूनतम 1 करोड़ रूपये की वार्षिक आय हो।
- राजस्थान में 4 रियासतें इन शर्तों को पूरा करती थी जिन्हें जिव्य राज्य भी कहा गया जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर।
- एकीकरण के समय राजस्थान में 19 रियासतें, 3 ठिकानें और 1 केन्द्रशासित प्रदेश था।
  केन्द्रशासित प्रदेश – अजमेर–मेरवाड़ा (विधानसभा को धार सभा कहा जाता है।)
- 1956 में अजमेर–मेरवाड़ा के प्रधानमंत्री – हरिभाऊ उपाध्याय थे।
- तीन ठिकाने
  (1) नीमराणा (अलवर) – राव राजेन्द्र सिंह
  (2) लावा (जयपुर) – बंस प्रदीप सिंह
  (3) कुशलगढ़ (बाँसवाड़ा) – हरेन्द्र सिंह
- **19 रियासतें व उनके शासक**

क्र.सं.	रियासत	शासक	क्र.सं.	रियासत	शासक
1.	जयपुर	मानसिंह द्वितीय	11.	शाहपुरा	सुदर्शन देवसिंह
2.	बीकानेर	सार्दुल सिंह	12.	किशनगढ़	सुमेर सिंह
3.	जोधपुर	हनुवन्त सिंह	13.	कोटा	भीमसिंह
4.	जैसलमेर	रघुनाथ सिंह	14.	बूँदी	बहादुर सिंह
5.	उदयपुर	भूपाल सिंह	15.	झालावाड़	हरिचन्द्र रेव सिंह
6.	सिरोही	अभय सिंह	16.	टोंक	अजीजुदौला
7.	डूँगरपुर	महाराव लक्ष्मण सिंह	17.	करौली	गणेशपाल वासुदेव
8.	बाँसवाड़ा	चन्द्रवीर सिंह	18.	धौलपुर	उदयभान सिंह
9.	भरतपुर	वृजेन्द्र सिंह	19.	अलवर	तेजसिंह
10.	प्रतापगढ़	अम्बिका प्रसाद			

- अंग्रेजों द्वारा एकीकरण के समय राजस्थान को 4 भागों में राजपूत स्टेट एजेन्सी में बाँटा गया जो निम्नलिखित है –
  (1) ढूँढ़ाड़, राजपूत स्टेट एजेन्सी – केन्द्र जयपुर था।
  (2) मारवाड़ राजपूत स्टेट एजेन्सी – केन्द्र जोधपुर था।
  (3) मेवाड़ राजपूत स्टेट एजेन्सी – केन्द्र उदयपुर था।

(4) हाड़ौती राजपूत स्टेट एजेन्सी – केन्द्र कोटा था।

- राजस्थान के एकीकरण में लगा समय – 8 वर्ष 7 माह 14 दिन
- राजस्थान की सबसे बड़ी रियासत – मारवाड़ रियासत व सबसे छोटी – शाहपुरा रियासत थी।
- सबसे प्राचीन रियासत – मेवाड़ रियासत थी तथा नवीनतम रियायत – झालावाड़ थी। जिसकी स्थापना अंग्रेजों ने 1838 में की थी।
- एकमात्र मुस्लिम रियासत – टोंक थी।
- राजस्थान का एकीकरण कुल 7 चरणों में सम्पन्न हुआ।
- 1939 में राजस्थान की रियासतों का एकीकरण करने हेतु प्रथम प्रयास गवर्नर जनरल लॉर्ड वेलिंग्टन द्वारा किया गया था परन्तु असफल रहा।
- एकीकरण से पूर्व राजस्थान के निम्नलिखित शासकों द्वारा पृथक संगठन बनाने का असफल प्रयास किया गया।
  (1) मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह द्वारा राजस्थान, गुजरात और मालवा के कुल 22 राज्यों का संगठन राजपूताना यूनियन नाम से बनाने का असफल प्रयास।
  (2) डूँगरपुर के शासक लक्ष्मण सिंह द्वारा डूँगरपुर, बाँसवाड़ा व प्रतापगढ़ को मिलाकर वागड़ संघ बनाने का असफल प्रयास किया गया।
  (3) कोटा के महाराजा भीमसिंह द्वारा कोटा, बूँदी, झालावाड़ रियासतों को मिलाकर हाड़ौती संघ बनाने का असफल प्रयास किया गया।
- जोधपुर महाराजा हनुवन्त सिंह द्वारा पाक में अपनी रियासत विलय करने का असफल प्रयास किया गया।

(1) प्रथम चरण – मत्स्य संघ – 18 मार्च, 1948

- के.एम. मुंशी के सुझाव के बाद इस चरण का नाम मत्स्य संघ रखा गया।
- अलवर महाराजा तेजसिंह व सहयोगी एन.बी. खरे को सांप्रदायिक दंगों के विषय में दिल्ली बुलाया गया तथा जाँच पूरी होने तक उन्हें दिल्ली में रहने का आदेश दिया गया।
- इस चरण में कुल 4 रियासतों और एक ठिकाने का विलय किया गया था। अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर, नीमराणा
- **राजप्रमुख** – उदयभान सिंह (धौलपुर)
- **उपराजप्रमुख** – गणेशपाल वासुदेव सिंह (करौली)
- **प्रधानमंत्री** – शोभाराम कुमावत – ये अलवर के निवासी थें। इन्होंने भारत छोड़ो आन्दोलन के समय प्रमुख योगदान दिया था।
- **उपप्रधानमंत्री** – जुगल किशोर चतुर्वेदी – इन्हे राजस्थान का नेहरू भी कहा जाता है।
- **राजधानी** – अलवर
- **उद्घाटनकर्ता** – एन.वी. गॉडगिल – ये तत्कालीन केन्द्रीय खनिज व उद्योग मंत्री थे।
- **उद्घाटन स्थल** – लौहागढ़ – भरतपुर
- **मत्स्य संघ की वार्षिक** – 1.84 करोड़ रूपये
- **जनसंख्या** – 18 लाख से अधिक

कुल इकाई – 5
रियासत – 4

(2) दूसरा चरण – पूर्व राजस्थान संघ – 25 मार्च, 1948

- इस चरण में 9 रियासतों और एक ठिकाने का विलय किया गया।
- **रियासतें** – कोटा, बूँदी, झालावाड़, टोंक, किशनगढ़, प्रतापगढ़, शाहपुरा, डूँगरपुर, बाँसवाडा व कुशलगढ ठिकाना
- **राजप्रमुख** – भीमसिंह
- **उपराजप्रमुख** – बहादुर सिंह
- **वरिष्ठ उपराजप्रमुख** – लक्ष्मणसिंह
- **प्रधानमंत्री** – गोकुल लाल असावा – ये मूलतः शाहपुरा के निवासी थे।
- **राजधानी** – कोटा
- **उद्घाटनकर्ता** – एन. वी. गॉडगिल ने कोटा में किया।
- **आय** – 2 करोड़ वार्षिक
- **जनसंख्या** – 23 लाख 60 हजार

(3) तीसरा चरण – संयुक्त राजस्थान – 18 अप्रैल, 1948

- इस चरण में उदयपुर रियासत का विलय पूर्व राजस्थान संघ में किया गया तथा इकाई का नाम बदलकर संयुक्त राजस्थान रखा गया।
- **राजप्रमुख** – महाराणा भूपाल सिंह
- **उपराजप्रमुख** – भीमसिंह
- **वरिष्ठ उपराजप्रमुख** – बहादुर सिंह
- **कनिष्ठ उपराजप्रमुख** – लक्ष्मण सिंह
- **प्रधानमंत्री** – माणिक्य लाल वर्मा
- **उपप्रधानमंत्री** – गोकुल लाल असावा
- **राजधानी** – उदयपुर
- **उद्घाटनकर्ता** – पं. जवाहर लाल नेहरू ने उदयपुर में की
- **वार्षिक आय** – 3.16 करोड़
- **जनसंख्या** – 42 लाख से अधिक

(4) चौथा चरण – वृहद् राजस्थान – 30 मार्च, 1949

- इस चरण में कुल पाँच इकाईयों का संयुक्त राजस्थान में विलय किया गया। इसका नाम बदलकर वृहद् राजस्थान रखा गया।
- चार रियासतें – जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर व लावा ठिकाना
- 30 मार्च को ही राजस्थान दिवस मनाया जाता है।
- **महाराजप्रमुख** – महाराणा भूपाल सिंह
- **राजप्रमुख** – मानसिंह द्वितीय

- **उपराजप्रमुख** – भीमसिंह
- **प्रधानमंत्री** – हीरालाल शास्त्री
- **राजधानी** – जयपुर – सत्यनारायण राव समिति की रिपोर्ट के आधार पर।
- इस रिपोर्ट में पेयजल की उपलब्धता और प्रशासनिक सुलभता को प्रमुख आधार बनाया गया था।
- उद्घाटनकर्त्ता – सरदार वल्लभ भाई पटेल
- इस चरण में विभागों का रियासत के अनुसार वितरण किया गया –
- **बीकानेर** – शिक्षा विभाग
- **जोधपुर** – न्याय विभाग
- **उदयपुर** – खनिज विभाग
- **कोटा** – वन विभाग
- **भरतपुर** – कृषि विभाग

(5) पाँचवां चरण – संयुक्त वृहद्/वृहत्तर राजस्थान – 15 मई, 1949

- इस चरण में मत्स्य संघ का विलय वृहद राजस्थान में किया गया। वृहत्तर राजस्थान नामक इकाई का गठन किया गया।
- भरतपुर और धौलपुर रियासतों के संदर्भ में निर्णय लेने हेतु शंकर राव समिति का गठन किया गया था। इसी की रिपोर्ट के आधार पर भरतपुर, धौलपुर समेत मत्स्य संघ का विलय किया गया।

(6) छठां चरण – राजस्थान संघ – 26 जनवरी, 1950

- इस चरण में सिरोही के आबू–देलवाड़ा क्षेत्र को बम्बई प्रान्त में मिला दिया।
- इसकी क्रियान्विति 7 फरवरी, 1950 को हुई।

(7) 7 वाँ चरण – वर्तमान राजस्थान – 1 नवम्बर, 1956

- इस चरण में निम्नलिखित परिवर्तन किये गये–
  (1) फजल अली आयोग की रिपोर्ट के आधार पर आबू देलवाड़ा का विलय राजस्थान में किया गया।
  (2) अजमेर–मेरवाड़ा का विलय भी कर लिया गया।
  (3) मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले के सुनेलटप्पा को राजस्थान में मिलाया गया।
  (4) झालावाड़ के सिंरोज क्षेत्र को मध्यप्रदेश में मिला दिया गया।
- संविधान के 7वें संशोधन 1951 के अनुसार राज्यों के कार्यकारी प्रमुख को मुख्यमंत्री और संवैधानिक प्रमुख को राज्यपाल कहा जाने लगा।
  मुख्यमंत्री – मोहनलाल सुखाड़िया
  राज्यपाल – गुरूमुख निहाल सिंह
- चन्द्रवीर सिंह – "ये विलय पत्र नहीं अपितु मृत्यु पत्र है।"
- हनुवन्त सिंह – "आज स्वाधीनता दिवस नहीं अपितु शोक दिवस है।
  जयपुर महाराजा मानसिंह द्वितीय ने राजस्थान को तीन भागों में बाँटने का प्रस्ताव रखा।
  पश्चिमी राजस्थान – बीकानेर, जोधपुर व जैसलमेर को मिलाकर
  i. संयुक्त राजस्थान

राजस्थान की कला एवं संस्कृति

2. राजस्थान मे लोकदेवता

राजस्थान में कुल पाँच पीर है – 'राह में पंगो'

1. रामदेवजी
2. हड़बूजी
3. मांगलिया मेहाजी
4. पाबूजी
5. गोगाजी

- ऐसे लोकदेवता जो सभी धर्मो में समान रूप से पूजे जाते हैं।
- ये पीर के श्रेणी में आते है।
- झुन्झार – गौरक्षा करते समय अपने प्राणों का त्याग।
- खवि – पित्तर पूजा से ख्याती प्राप्त लोकदेवता
- खारामामा – जानवर की बली (शराब का सेवन)
- मीठा मामा – साधारण प्रकार का भोग

रामदेवजी

- पीरों का पीर रामदेवजी हैं।
- जन्म – उण्डुकासमेर गाँव शिव तहसील, बाड़मेर वि. स. 1405/1409
- पिता – अजमलजी, माता – मेणादें (मेणीदेवी)
- पत्नी – नेतल दे – दलजो सोढा की पुत्री – अमरकोट – पाकिस्तान
- बहिन – सुगणा बाई, लांच्छा
- धर्म बहन – डाली बाई – मेघवाल जाति
- भाई – ब्रह्मदेव – बलराम का अवतार
- गुरू – बालीनाथ – गुफा – मसुरीया पहाड़ी जोधपुर
- अवतार – कृष्ण अवतार
- वंश – अर्जुन वंशीय
- वाहन – लीला घोड़ा (श्वेत) रंग – सफेद
- जाति – राजपूत (गोत्र – तंवर)
- समाधि – जीवित – भाद्रपद शुक्ल एकादशी (रूणेचा, रामदेवरा, जैसलमेर)
- वि.स./1458 ई. में।

उपनाम

कुष्ठ रोग निवारक देवता , ठाकुर जी

- पीरों का पीर, साम्प्रदयिकता सद्भाव का देवता। मक्का के 5 पीरों ने पंचपीपली नामक स्थान पर पीरों का पीर कहा था।
- सहयोगीः हरजीभाटी, लक्खी बंजारा, रत्ना राईका हैं।
- यह भारत के सबसे बड़े लोकदेवता है।
- रामदेवजी ने शुद्धि आन्दोलन चलाया परावर्तन नाम से इस आन्दोलन में मुसलमान बने हिन्दूओं की शुद्धि कर वापिस हिन्दू बनाया था।
- भैरव राक्षस का वध सातलमेर (पोकरण) में रामदेव जी ने किया।

- रामदेव जी ने छुआछुत को समाप्त किया था।
- रामदेव जी ने कामड़िया पंथ की स्थापना की।
- रामदेव जी ने कुष्ठ रोग निवारण किया था।
- रामदेव जी के चमत्कारी उपाय को 'पर्चा देना' कहते है।
- एकमात्र लोकदेवता रामदेव जो कवि भी थे।
- रामदेव जी ने 'चौबीस बणियां' ग्रन्थ लिखा।
- रामदेव जी के मेघावाल जाति के भक्त 'रिखिंया' कहलाते हैं।
- हिन्दू कृष्ण का अवतार मानकर व मुसलमान 'रामसा पीर' के रूप में पूजते हैं।
- डालीबाई ने रामदेव जी के एक दिन पहले समाधि ली थी।
- रामदेव जी हड़बूजी के समकालीन थे।
- रामदेव जी के मन्दिरों को 'देवरा' कहा जाता है जिन पर श्वेत या 5 रंगों की ध्वजा फहराई जाती है, जिसे 'नेजा' कहते हैं। (सफेद, काला, लाल, हरा, नीला)
- रामदेव जी मन्दिर का निर्माण गंगासिंह ने सन् 1931 में करवाया था।
- रामदेव जी ने मूर्ति पूजा, तीर्थयात्रा, जाति प्रथा का विरोध किया अतः एकमात्र लोकदेवता जिसके प्रतीक चिन्ह के रूप में 'पग्लये – पद्चिन्ह' पूजे जाते हैं।
- रामदेव जी समाज सुधारक भी थे।
- रामदेव जी का मेला 'भाद्रपद शुक्ल दशमी' (भादवा ''बाबेरी बीज'' शुक्ल द्वितीया से भादवा शुक्ल एकादशी) को रूणेचा जैसलमेर में मेला भरता है।
- यह साम्प्रदायिक सद्भाव का सबसे बड़ा मेला है।
- लोकदेवताओं में सबसे लम्बा गीत रामदेव जी का है (60. मी.)
- रामदेव जी के रात्रि जागरण किये जाते है जिन्हें 'जम्मा' कहते हैं।
- रामदेव के यात्री 'जातरू' कहलाते हैं।
- रामदेवजी के समकालीन मल्लीनाथ जी थें जिससे पोकरण क्षेत्र प्राप्त किया।
- रामदेवजी को कपड़ा बना घोड़ा चढाया जाता है। जिसे 'घोड़ले' कहते हैं।
- रामदेवजी के याद में गाये जाने वाले गीत ब्यावले कहलाते हैं व फड़ ब्यावले भोपे बांचते है। (जैसलमेर, बीकानेर)
- रामदेवजी का पवित्र स्थान 'पंची बावड़ी' पोकरण (जैसलमेर) हैं।
- रामदेवजी ने हरजी भाटी को पहला पर्चा दिया था।
- रामदेवजी की समाधि स्थल – राम सरोवर की पाल कहलाती है।
- रामदेवजी ने अपने बहन सुगणा को पोकरण क्षेत्र दहेज में दे दिया था व रूणेचा की स्थापना की थी।
- सुगणा बाई का विवाह पूंगल (बीकानेर) के शासक विजयसिंह के साथ हुआ।
- रामदेवजी के भक्त जयकारे लगाते हैं – जिसे 'बादली' कहते हैं।
- रामदेवजी का धागा/तांती – पातरी / कुण्डली कहलाते हैं।
- रामदेवजी का थान/देवरा कंदन वृक्ष के नीचे होते हैं।
- रामदेवजी के पद्चिन्ह – पग्लया कहलाते हैं इनके रखने के स्थान को ताख या आलिया कहते हैं।
- रामदेवजी की 'कसम' 'आण' कहलाती है।

मुख्य पूजा स्थल

- खुण्डियावास – अजमेर (राजस्थान का छोटा रामदेवरा)
- सूरता खेड़ा – चित्तौड़गढ
- बिरांटिया – पाली
- कठोती – नागौर
- जूनागढ़ – गुजरात (भारत का छोटा रामदेवरा)
- मंसुरिया पहाड़ी – जोधपुर
- रामदेवजी की राजस्थान से बाहर मान्यता गुजरात व मध्यप्रदेश में हैं।
- यूरोप क्रांति से पहले रामदेव जी द्वारा हिन्दू समाज को दिया गया सन्देश 'समता व बन्धुता' था।
- रामदेवजी ने पश्चिमी भारत में मतान्तरण व्यवस्था को रोकने को अहम भूमिका निभाई थी।
- रामसरोवर पाल के किनारे – पर्चा बावड़ी है।
- रामदेवजी फड़ का निर्माण – चौथमल जोशी द्वारा – वाद्य यंत्र – रावण हत्था तथा वाचन – कामड़ जाति के भोपे करते हैं।
- इस फड़ को मुख्यतः कोली, भांभी, बलाई अन्य रामदेव जी भक्तों द्वारा बाँचा/गाया जाता है।

गोगाजी

- जन्म – 1003 वि. सं. – ददरेवा (चूरू) (भाद्रपद कृष्ण नवमी)
- पिता – जेवरसिंह, माता – बाच्छल दे।
- पत्नी – 2
- प्रथम विवाह – सुरियल – कजरीवन की पुत्री – उत्तरप्रदेश
- दूसरा विवाह – केलमदे – कोलुमण्ड (जोधपुर) बुढोजी राठौड़।
- पुत्र – कुल – 47 गुरू – गोरखनाथ जी → साँपो में सिद्धि प्राप्त।
- सवारी – नीली घोड़ी (गोगा बप्पा) कहते हैं– (रंगनीला)
- **उपनामः**

  जाहरपीर – महम्मूद गजनवी ने कहा था।

  ↓→ शाब्दिक अर्थ – "साक्षात् देवता"
- राजा मुण्डुलिक, जिन्दा पीर, साँपो का देवता, गौरक्षक
- प्रतिक चिन्हः पत्थर की मूर्ति पर साँप का चित्रण।
- गोगाजी का छोटा मन्दिर – थान कहलाता है जो खेजड़ी वृक्ष के नीचे होता है।
- ध्वजा – सफेद रंग की होती है।
- गीत – छांवली कहलाते हैं।
- पुजारी – चायल कहलाता है।/चेवाण
- मौसेरे भाई – अर्जन – सर्जन थे। – माता – कांछल देवी थी ।
- गोगाजी का जन्म गोरखनाथ जी द्वारा दिये गये 'गुगल' फल से हुआ था।
- गोगाजी ने नागदेवता ताक्षक को पराजित कर अपनी पत्नी केलम दे को पुनः जीवित कराया। अतः इसे साँपो का देवता कहते हैं।
- मौसेरे भाई अर्जन – सर्जन के साथ जमीनी विवाद के कारण सांचौर जालौर में महम्मूद गजनवी ने गोगा जी की गायें लूटी।
- गोगा जी महम्मूद गजनवी के सामने गौरक्षा करते हुए वीर गति को प्राप्त हो गया।

- गोगाजी व गजवनी के मध्य युद्ध का वर्णन कवि मेह द्वारा रावसाल ग्रन्थ में किया गया है।
- कर्नल रॉड के अनुसार गोगाजी के 47 पुत्र न 52 भतिजों के साथ यह युद्ध किया व वीर गति को प्राप्त सतलज नदी के पास 1023 ई. गजनवी के साथ गोगाजी ने 11 बार युद्ध किया था।
- गोगाजी के समकालीन महम्मूद गजनवी व गोरखनाथ जी हैं।
- गोगाजी की धूरमेड़ी 'गोगामेडी' तहसील नोहर जिला हनुमानगढ में है।
- गोगामेड़ी गाँव में गोगाजी के मुख्य मन्दिर का निर्माण फिरोजशाह तुगलक ने मकबरेनुमा आकृति में करवाया।
- सन् 1931 में आधुनिक मंदिर का निर्माण गंगासिंह ने करवाया।
- गोगाजी मन्दिर के मुख्य द्वारा पर अरबी भाषा में बिस्मिला शब्द अंकित है, इसका अर्थ – शुभ होना।
- गोगाजी के पुजारी **चायल** कहलाते हैं।
- 11 माह पूजा मुस्लिम (कयामखानी मुस्लिम) करते हैं।
- भाद्रपद के एक महीने में पूजा हिन्दू 'मेहर' – मेघवाल करते है जिन्हें भोपा कहते हैं।
- गोगाजी का मुख्य मंदिर गोगामेड़ी है।
- गोगाजी का मेला – भाद्रपद कृष्ण नवमी को गोगामेडी में लगता है।
- भादवा सुदी एकम से भादवा सुदी ग्यारस तक।
- यह उत्तरी – भारत का सबसे बड़ा मेला है।
- इस मेले में 'गोगा नृत्य' किया जाता है।
- गोगाजी की ओल्डी साँचोर (जालौर) की प्रसिद्ध है।
- यहाँ पर गोगाजी की गायें लूटी गयी।
- इस ओल्ड़ी का निर्माण राजाराम कुम्हार ने करवाया। (केरियां गाँव)
- गोगाजी की शीश मेड़ी/सिद्ध मेड़ी ददरेवा (चूरू) में है।
- यहाँ पर गोरखाना तालाब है। गोगाजी की घोड़ी की प्रतिमा है।
- यहाँ पर गोगाजी की घोड़ी पर सवार प्रतिमा है। (गोरखनाथजी की प्रतिमा)
- हिन्दू 'नागराज' व मुस्लिम गोगापीर के रूप में पूजते हैं।
- गोगाजी का वाद्य यंत्र डेरू है – आम की लकड़ी से निर्मित होता है।
- गोगाजी को गुजरात में रेबारी जाति के लोग 'गोगामहाराज' कहते हैं।
- राजस्थान से बाहर मान्यता – हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश में है।
- गोगाजी राजपूत जाति में चौहान वंश थे।
- हिन्दू – मुस्लिम एकता एंव सांस्कृति समन्वय की दृष्टि से गोगाजी का विशेष महत्व है।
- उत्तर प्रदेश में मुस्लिम समुदाय के लोग 'जाहरपीर' के रूप में पूजते हैं।
- यह लोग गोगाजी के मेले में लौहे की छड़ी से अपने शरीर पर प्रहार करते हैं, जिसे **'पेंजण'** कहते हैं।
- गुगो – गु – गुरू, गो – गोरखनाथ को द्योतक है।
- गोगामेड़ी के चारों तरफ जंगल को 'पणिरोपण' एवं जोहड़ कहते हैं।
- भाद्रपद कृष्ण नवमी (गोगा नवमी) को गोगा जी की 'अश्वरोही' भाला लिए यौद्धेय के प्रतीक के रूप में अथवा सर्प के प्रतीक के रूप में पूजा जाता है।
- गोगाजी का मन्दिर खेजड़ी वृक्ष के नीचे होता है।
- गोगाजी को जाहरपीर के रूप में पूजने से 'सर्प देव' का विष प्रभावहीन हो जाता है।

केसरिया कुंवरजी

- यह गोगाजी का ज्येष्ठ पुत्र था।
- मंदिर खेजड़ी वृक्ष के नीचे ध्वजा सफेद रंग से युक्त।
- जन्म स्थल – ददरेवा (चूरू)
- इसे भी साँपों का देवता कहते हैं – भोपे साँपो का जहर मुख से चूसकर बाहर निकालते है।
- पूजास्थल – ददेरेवा (चूरू)
  - बुध्मसर (हनुमानगढ)
- मेला – भाद्रपद कृष्ण अष्टमी

मेहाजी मांगलिया

- जन्म स्थल – बापिणी गाँव (जोधपुर) 14वीं सदी
- जोधपुर शासक राव चूँड़ा के समकालीन थे।
- पिता – गोपालराव सांखला
- गौत्र – राजपूत – 'सांखला'
- कर्नल जेम्स टॉड ने गौत्र – पंवार बताया।
- ननिहाल पक्ष में पालन पोषण होने के कारण 'मांगलिया' कहलाये।
- मेला – भाद्रपद कृष्ण अष्टमी – बापिणी गाँव जोधपुर
- घोड़े का नाम – किरड़ काबरा था।
- जैसलमेर के राव रणगदेव भाटी से गौरक्षा करते हुए युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुए।
- मेहाजी का सारा जीवन धर्म की रक्षा व मर्यादाओं की पालना में बीता था।
- पुजारी – मांगलिया राजपूत
  - ↓→ वंश में वृद्धि नहीं होती है।
- अच्छे शकुन शास्त्री भी माने जाते थे।

पाबूजी

- जन्म – वि.स. 1296 कोलुमण्ड – फलौदी – जोधपुर
- पिता – धाँधल जी माता – कमला दे।
- पत्नी – फूलन दे/सुप्यार दे – अमरकोट पाकिस्तान– सूरजमल सोढा
- जाति – राजपूत – गौत्र – राठौड़
- सवारी – केसर कालवी (घोड़ी) (यह देवल चारणी की थी।)
- अवतार – लक्ष्मण
- उपनाम – हाड़ – फाड़ के लोकदेवता, उँटो का देवता
- प्लेग रोग का निवारक देव, गोरक्षक देवता
- पाबूजी राठौड़ ने देवली चारणी की गायों की रक्षा करते हुए देचूं (जोधपुर) में बहनोई जायल (नागौर) शासक जिन्दराव खिंची के सामने युद्ध करते हुए 1276 ई. में वीर गति को प्राप्त।
- पाबूजी की जीवनी ग्रन्थ पाबू प्रकाश में मिलती है – लेखक – आसियाँ मोडजी।
- पाबूजी ने 7 थोरी भाइयों की रक्षा गुजरात के अन्ना बागेला नामक शासक से की इस कारण इन्हें थोरी जाति अराध्या देव मानती है (थोरी/भील)

7. आभूषण, वेशभूषा व खान - पान

सिर

- राखडी (रखडी), बोर, बोरला, टीका, शीशफूल, सांकली, दामनी, सुरमा, माँग, मेबंद/मेमंद, टीका, टिकडा, टीडीभलको ।

गला/छाती

- माँदळिया, खुंगाळी, पंचलडी, जंडीर, तुलसी, बजट्टी, हाँसली, तिमणियाँ, पोत, हार, हंसहार, चन्द्रहार (पाँच सात लडियों युक्त), बजरबंटी, बलवेडा, हाँकर, चंपाकली, सरी, कंठी, कंठमाला, हालरो ।

कान

- झेला/झाले, टोटी, लौंग, छेलकडी, मुरकिया, कर्णफूल, पीपलपत्रा, फूलझुमका, झंगोट्या, बाली, टॉप्स, झुमका, सुरलिया, लटकन ।

नाक

लूंग, काँटा, नथ, लटकन, वारी, चूनी, चोप, भंवरियो, बेसरी ।

चन्द्रहार - पाँच -सात लडीवाला एक प्रकार का हार होता है ।
चूंप - दाँतो में सोने के पत्तर की खोळ बनाकर चढाई जाती है । कोई स्त्री दाँतो के बीच में श्यार से छिद्र बनाकर उसमें सोने की कील जडवाती है जिसे चूंप कहा जाता है ।
झालरा - सोने अथवा चाँदी की लडों वाला आभूषण जिसमें घूघरियाँ लटकती है ।
अंगुली - दामणा, हथपान, छडा, बीछिया, अरसी ।
अँगूठी, बींठी, मूंदडी - अंगुलियों में पहने जाने वाले छल्लों को कहा जाता है ।
कुडक, नथडी या भँवरकडी - अँगूठी के बराबर या उससे छोटा छल्ला, जो छोटी लडकियाँ पहनती है ।
कमर - कंदोरा, जंडीर, तगडी, करधनी । कणकती - कमर में पहनी जाने वाली सोने अथवा चाँदी की झूलती श्रृंखलाओं की पट्टी होती है । सोने - चाँदी की इस सांकल को कन्दोरा भी कहते है ।
लटका -लहँगे के नेफे में अटकाकर लटकाया जाने वाला आभूषण, इसमें सोने / चाँदी के छल्ले या चाबियाँ लटकी रहती है ।

हाथ

चूडा/चूडी, नोगरी, आँवळा, हथफूल, कडा, कंगण, चाँट, गजरा, खंजरी ।

बाजू

बाजू, बाजूबंद, भुजबंध, अणत, टड्डो, तकया

पाँव

पैंजणी, कडा, टणका, आँवळा/ओवला, जीवी, कडा, तोडा, छड (छडा), लंगर, लच्छन, हिरनामैन, पायल/पायजेब, नुपूर, घुँघरू, झाँझर, नेवरी, रमझोळ, गोळ्या, फोलरी, बीछुडी, चट्टी/चुट्टी, झाँझरिया/झांझर्या, नेवर ।

अन्य आभूषण

कलंगी – यह आभूषण नीचे से पतला तथा ऊपर से तिकोना गोल होता है, इसे साफे पर लगाया जाता है ।

सिरपेच – यह साफे पर आगे की ओर बाँधने वाला पतले पट्टे जैसी आकृति वाला आभूषण होता है जो धातु, मोती, पन्ने से बनाया जाता है ।

थमण्यों – यह चिलों से बनी हुई घनी लडियों के बीच चार अंगुल लम्बी मोगरों वाली सोने की डण्डी लगाकर बनाया जाता है । भीनमाल क्षेत्र में इसे मुठ्या कहा जाता है ।

काँठला – गले का यह आभूषण छोटे बच्चे को पहनाया जाता है ।

चौक – गलें के इस आभूषण में देवताओं की मूर्ति अंकित होती है ।

हिरनामैन – महिलाओं द्वारा पैरों में यह आभूषण सजावट के रूप में पहना जाता है ।

मोरूवर – मोर रूपी यह आभूषण महिलाओं द्वारा कान में लटकाया जाता है ।

गोफण – स्त्री के बालों की वेणी में गुथा जाने वाला आभूषण ।

अडकडी – किसान स्त्रियों की बाँह का चाँदी का आभूषण ।

खंजरी – महिलाओं के हाथ का आभूषण

खूँगाली – गले का आभूषण ।

अंगूठा – पैर का आभूषण, जिसे पाँव के अंगूठें में पहना जाता है ।

आँवला सेवठा – इसे हाथ में कडे के साथ धारण किया जाता है ।

गजरा – यह हाथ का आभूषण होता है ।

चौथ – यह पुरूषों का आभूषण होता है, इसे सीने, कमर और पेट पर लपेट कर पहना जाता है ।

ट्डडा – इसे स्त्रियों द्वारा भुजा पर पहना जाता है । यह चुडे की तरह बना होता है ।

टनका – यह चाँदी का बना हुआ स्त्रियों के पाँव का आभूषण है ।

टिड्डी – यह स्त्रियों के ललाट का आभूषण है । इसे भठकों नाम से भी जाना जाता है ।

टीकी – स्त्रियों के ललाट का आभूषण है । इसे ललाट के मध्य में लगाया जाता है ।

ठुंसी, ताँती, तुलसी – यह स्त्रियों के गले के आभूषण है ।

नकेसर – यह नाक का आभूषण है इसमें नथ के समान एक छोटी बाली होती है जिसमें मोती पिरोया रहता है ।

नेवर – यह पाँव का आभूषण है यह पायल के समान होता है ।

नोगरी, पाटला – यह हाथ का आभूषण है जो मोतियों की लडों के समूह के रूप में होता है ।

पगपान – यह पाँव का आभूषण है जो हथफुल के समान होता है ।

पीपल पत्रा, ओगन्या – यह रिंग के आकार व पान के पत्ते के आकार के आभूषण है जो कान के ऊपरी हिस्से में छेद करके पहना जाता है ।

बजट्टी – यह कान का एक आभूषण है जो झुमके के साथ लटका रहता है ।

बोर, रखडी – बोर चाँदी का बना होता है व रखडी, कांच के नंगों की जडाई की बनी होती है । इन दोनों को सिर पर बांधा जाता है ।

तिमणिया/मांदलिया – यह गले का आभूषण है ।

वेशभूषा

ओढनी – शरीर के निचले हिस्से में घाघरा और ऊपर कुर्ती, काँचली पहनने के बाद स्त्रियाँ ओढनी ओढती है ।

दामणी – यह मारवाड में ओढनी का एक प्रकार है ।

चुनरी – इसमें अनेक तरह के अभिप्राय बनते है । आहड (उदयपुर) में भीलों की चूनड छपती है ।

पोमचा (पीला) – इस विशेष प्रकार की ओढनी में पद्म या कमल की तरह के गोल-गोल अभिप्राय बने होते है । पोमचा बच्चे के जन्म पर शिशु की माँ के लिए मातृ पक्ष की ओर से लाया जाता है ।

लहरिया – श्रावण में विशेष कर तीज के अवसर पर राजस्थान की स्त्रियाँ इसे पहनती है ।

जामा – राजस्थान में शादी-विवाह या युद्ध जैसे विशेष अवसरों पर इसे पहनने का रिवाज था ।

बुगतरी (बख्तरी) – ग्रामीणों द्वारा श्वेत रंग की पहने जाने वाली अंगरखी को कहते है ।

अंगरखा/अंगरखी – बदन पर पुरूष वर्ग काले रंग का अंगवस्त्र पहनता है जिस पर सफेद धागे से कढाई की जाती है ।

राजस्थानी अचकन – अंगरखी का उत्तर रूप होता है ।

चुगा (चोगा) – सम्पन्न वर्ग द्वारा अंगरखी के ऊपर पहने जाने वाला वस्त्र होता है, यह प्रायः रेशमी, ऊनी या किमखाब का बना होता था ।

आतमसुख – यह अंगरखी और चुगे पर पहने जाने वाला वस्त्र होता है ।

सिटी पैलेस (जयपुर) – यहाँ सबसे पुराना आतमसुख सुरक्षित है ।

पटका/कमरबंद – जामा के ऊपर कमरबन्द बाँधने की प्रथा थी जिसमें तलवार या कटार घुसी होती थी ।

अंगोछा – यह पुरूषों का वस्त्र है जिसे वे सिर पर बाँधते है ।

कटकी – यह अविवाहित युवतियों और बालिकाओं की ओढनी है । इसकी जमीन लाल होती है ।

लूगडा (अंगोछा साडी) – इसमें सफेद जमीन पर लाल बूटे छपे होते है । आदिवासी स्त्रियों द्वारा पहने जाने वाला यह घाघरे का ही एक रूप है ।

तारा भाँत की ओढनी – यह आदिवासी स्त्रियों में बडी लोकप्रिय है ।

ज्वार भाँत की ओढनी – ज्वार के दानों जैसी छोटी-छोटी बिन्दी वाली जमीन और बेल बूटे वाले पल्लू की ओढनी होती है ।

लहर भाँत की ओढनी – इसमें ज्वार भाँत जैसी बिन्दियों से लहरिया बना होता है और किनारा व पल्लू ज्वार भाँत जैसा ही होता है ।

ठेपाडा/ढेपाडा – भीलों में पुरूष वर्ग द्वारा पहने जाने वाली तंग धोती होती है ।

सिंदूरी – भीलों में महिला वर्ग द्वारा पहने जाने वाली लाल रंग की साडी ।

खोयतू – लंगोटिया भीलों में पुरूषों द्वारा कमर पर बाँधी जाने वाली लंगोटी को कहते है ।

कछावू – लंगोटिया भील की महिलाओं द्वारा स्त्रियों के घुटने तक पहना जाने वाला नीचा घाघरा । यह वेशभूषा प्रायः काले और लाल रंग की होती है ।

चीर, चारसौं, दुकूल – स्त्रियों की वेशभूषाएँ होती है ।

पग – पगडियाँ

चिन्दी – गरीब व्यक्ति 3-4 हाथ लम्बे कपडे को सिर पर बाँधते थे, वही चिन्दी कहलाता था ।

पाग/पागना/मोठिया – इसका अर्थ है – लपेटना या सरोबार होना । पगडी को सजाने के लिए तुर्रे, सरपेच, बालाबंदी, धुगधुगी, शोरपेच, पछेवडी, फतेपेच आदि शब्द काम में लेते थें । राखी के पर्व पर

भाई के पास भेजी जाने वाली पगडी 'मोठडा' रंग की होती है । प्रायः मलमल को फाडकर पाग बनायी जाती थी । पाग की लम्बाई 14 से 20 मीटर तथा चौडाई 6 से 8 इंच तक होती है ।

खिडिकिया पाग - यह मारवाड में 17 वीं सदी तक प्रचलित रही, वर्तमान में खिडकिया पाग का उपयोग केवल 'गणगौर' के अवसर पर 'ईसरजी' के लिये किया जाता है ।

पेचा - यह पाग का एक प्रकार है । मध्यकाल में क्षत्रिय वर्ग के लोग पेच ही बाँधते थे । राजस्थान के 'जला' लोकगीत में राठौडी पेचे का वर्णन मिलता है । मदील पेचे का एक प्रकार है ।

साफा - यह अरबी के साफ से बना हुआ शब्द है - साफ का अर्थ है उष्णीय या पगडी ।

जोधपुर साफा - इसका प्रचलन महाराजा जसवन्तसिंह (द्वितीय) से माना जाता है । जोधपुर के महाराज प्रतापसिंह ने जोधपुरी साफे को देश-विदेश में ख्याति दिलाई थी ।

शैबीला साफा - यह साफा मारवाड का प्रसिद्ध है ।

- राजस्थान के राजपूतों में राठौडी पेंच सर्वाधिक पसंद किया जाता था ।

चौराही गोल पेंच - जालौर जिले में पगडी का यह प्रकार प्रचलित था ।

मेवाडी पगडी - राज्य की सर्वाधिक प्रसिद्ध पगडी कहते है ।

अकबर के समय में मेवाड में ईरानी पद्धति की अटपटी पगडी का प्रचलन था । मेवाड महाराणा के पगडी बाँधने वाला व्यक्ति छाबदार कहलाता था ।

बरखरमा पाग - मेवाड में प्रचलित सभी पागों में यह सर्वाधिक प्रचलित रूप है ।

भदील पगडी - यह पगडी दशहरे पर प्रयोग की जाती थी ।

लहरिये की पगडी - तीज पर पहनी जाती है ।

टोपी के प्रकार - चौखुलिया, दखलिया, खाकसा, कांकसनुमा, चौपलिया, दुपलिया ।

- मेवाड के महाराणा अमरसिंह के पुत्र कर्णसिंह ने मुगल बादशाह शाहजहाँ के साथ अपनी पगडी की अदला - बदली कर मेवाड और मुगलों में भाईचारा कायम किया ।
- यदि कोई निःसंतान व्यक्ति किसी बच्चे को गोद लेना चाहता है तो समाज और अपने कुटुम्ब के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के समक्ष उसे पगडी बँधानी पडती है । मारवाड में इस प्रकार से पगडी बँधाने को 'पोतिया बाँधाना' कहा जाता है । मेवाड में इस प्रकार पगडी बाँधने को 'लहरिया बाँधाना' कहते है ।
- पगडी की रस्म का अर्थ है मृत्यु के बारहवें दिन मृतक के पुत्र को पगडी बँधाकर उसका उत्तराधिकारी घोषित किया जाना । शोक, रहने तक सफेद साफे पहने जाते है ।
- विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले 'बनडा' गीतों व उमराव गीत अथवा खंगार, जला गीतों में पगडियों का वर्णन मिलता है ।
- गींदड के खेल में पेचा का गीत गाया जाता है ।
- मारवाड के राष्ट्रगीत 'धूंसा' में ढूँढाडी और मारवाड की पगडियों के मामले में जनता की भिन्न - भिन्न अभिरूचि को प्रकट किया गया है । शेखावटी में ढूँढाडी पाग (मोर-पंख के तरह सुंदर) का प्रचलन था ।
- जाटों में तोरीफूला या बूंटीदार दुपट्टे की पाग को बाँधने का रिवाज था ।

12. राजस्थान की चित्रकला

- भारतीय चित्रकला का जनक :– रवि वर्मा (केरल)
- राजस्थान चित्रकला का जनक :– आनन्द कुमार स्वामी
  - ↳ 1916 में ग्रन्थ "राजपूत पैंटिंग"
- इस पुस्तक में राजस्थान चित्रकला का सर्वप्रथम वैज्ञानिक विभाजन।
- राजस्थान में चित्रकला का आधुनिक जनक :– कुंदन लाल मिस्त्री
- राजस्थान चित्रकला की शुरूआत – 15 वीं से 16 वी. सदी के मध्य (1500 ई.)।
- कार्ल खण्डेलवाला के अनुसार राजस्थान चित्रशैली का स्वर्णकाल 17 वीं से 18 वी. सदी के मध्य।
- राजस्थान चित्रशैली की उत्पत्ति :– गुजराती/जैन/अंजता अपभ्रंश
- राजस्थान चित्रशैली के उपनामः– हिन्दू चित्रशैली – एन.सी. मेहता
- राजपूत चित्रशैली – गांगुली, हैवल
- राजस्थानी चित्रशैली – रामकृष्णदास/कर्नल टॉड
- तिब्बत के इतिहासकार तारानाथ शर्मा के अनुसार राजस्थान का प्रथम चित्रकार 7 वी. सदी में मरूप्रदेश– श्रृंगधर थे। ये यक्ष शैली अजन्ता शैली का एक रूप है इन्होंने पशु–पक्षियों पर सर्वाधिक चित्र बनाये थे।
- **राजस्थानी चित्रकला का प्रथम चित्रित ग्रंथ**
  - ➢ दसवैकालिका सूत्र चुर्णी/ओध निर्युक्ति सुक्त
  - ➢ 1060 ई. – ताम्रपत्र पर
  - ➢ जिनभद्र सूरी भूमिगत संग्रहालय एवं जैनभण्डार – जैसलमेर में सुरक्षित
- राजस्थान चित्रकला की जन्मभूमि – मेदपाट/मेवाड है।
- मेवाड चित्रशैली का प्रथम चित्रित ग्रंथ – श्रावक प्रतिक्रमण सूत्रचूर्णी (चित्रकार – कमलचंद)
  - ↳ इसे 1260 ई. में तेजसिंह के काल में बनाया था।
  - ↳ यह चित्रित ग्रंथ वर्तमान में सरस्वती भण्डार उदयपुर में सुरक्षित है।
- दर (भरतपुर) से प्राचीन पक्षियों के चित्रों की खोज :– डॉ. जगन्नाथ पुरी
- आलनिया (कोटा) से 5000 वर्ष पुराने शैलचित्रों की खोज :– विष्णुश्रीधर वाकणकर
- बैराठ सभ्यता (जयपुर) से प्राप्त प्राचीन चित्रों के आधार पर राजस्थान चित्रशैली को " प्राचीन युग की सभ्यता" कहा है।

शब्दावली

1. जोतदाना – चित्रों का संग्रह है।
2. चित्तेरा – चित्रकार को चितेरा कहा जाता है।
3. मोरनी मांडणा – इस चित्रकला का प्रचलन मीणा जनजाति में है।
4. डमका – चित्रों में प्रयुक्त रंग।

नोट – राजस्थान चित्रकला में पीले + लाल रंग सर्वाधिक प्रयोग।

प्रमुख चितेरा

1. भीलों का चितेरा/बारात का चितेरा :– बाबा गोवर्धन लाल (राजसमंद)
2. नीड का चितेरा :– सौभाग्य मल गहलोत (जयपुर)
3. श्वानों का चितेरा :– जगमोहन माथेडिया (जयपुर)
   - ↳ 3000 श्वानों के चित्र
   - ↳ लिम्का बुक में दर्ज

4. जैनशैली का चितेरा :– कैलाश वर्मा
5. भैंसों का चितेरा :– परमानन्द चोयल (कोटा)
6. गाँवों का चितेरा :– भूरसिंह शेखावत (बीकानेर) ; देशभक्त/शहीदों के चित्रण
7. कृपालसिंह शेखावत का गुरू – महू (सीकर)
8. पशुओं व भित्ति चित्रण का चितेरा – देवकीनन्दन (अलवर) "Master of Nature and Living object"

- महाराणा प्रताप के चित्रों का चित्रण – A.H. मूलर (जर्मन)
- भारतीय चित्रकला का स्वर्णकाल 17 वीं शताब्दी/जहांगीर का काल।

राजस्थानी चित्रकला को 4 स्कूलों में विभाजित किया है:–

1. मेवाड स्कूल ऑफ पेन्टिग
- A. उदयपुर चित्रशैली
- B. नाथद्वारा चित्रशैली
- C. देवगढ चित्रशैली
- D. चावण्ड चित्रशैली

2. मारवाड स्कूल ऑफ पेन्टिग
- A. जोधपुर चित्रशैली
- B. जैसलमेर चित्रशैली
- C. बीकानेर चित्रशैली
- D. नागौर चित्रशैली
- E. बणी–ठणी (किशनगढ) चित्रशैली

3. ढूंढाड स्कूल ऑफ पेन्टिग
- A. आमेर चित्रशैली
- B. जयपुर चित्रशैली
- C. उनियारा (टोंक) चित्रशैली
- D. अलवर चित्रशैली
- E. शेखावाटी चित्रशैली

4. हाडौती स्कूल ऑफ पेन्टिग
- A. कोटा चित्रशैली
- B. बूंदी चित्रशैली

1. उदयपुर/मेवाड चित्रशैली

- प्रधान रंग:– पीला
- प्रारंभ काल:– राणा कुंभा
- स्वर्णकाल:– जगतसिंह– प्रथम
- प्रमुख चित्रकार:– साहबुद्दीन, रूकनुदीन, भैराराम, कृपाराम, मनोहर, देवन्दा, रामू, मुन्ना, घासीलाल
- मेवाड चित्रशैली को चित्रशैलियों की जननी कहा जाता है।
- अजन्ता शैली का सर्वप्रथम प्रभाव मेवाड चित्रशैली पर आया।
- चित्रकारों के प्रशिक्षण हेतु जगतसिंह – प्रथम ने 'कला विद्यालय' की स्थापना करवाई। जिसे चितेरों की ओवरी/तस्वीरों रो कारखाना कहा जाता है।
- राणा कुंभा को राजस्थानी चित्रकला का जनक कहा जाता है।
- सुपार्श्वनाथ चरित्रम्/सुपसनाह चरित – यह जैन ग्रंथ है।
  - (1422–23), राणा मोकल के काल में। चित्रकार – हीरानन्द
  - स्थान – देलवाडा (सिरोही) निर्देशन – देवकुल पाठक
- 1540 ई. में नानकराम ने 'भागवत पुराण' का चित्रण किया है।
- 1651 ई में मनोहर नामक चित्रकार ने मेवाड चित्रशैली में 'रामायण का चित्रण' किया है।
- वर्तमान में मुंबई संग्रालय में सुरक्षित है।
- मेवाड की मोनालिसा – ''रामायण का चित्रण'' है।

- विष्णु शर्मा द्वारा लिखित कहानी "पचतंत्र का चित्रण " मेवाड शैली में 'नुरदीन' नामक चित्रकार द्वारा किया गया है।
- इस कहानी में कलीला व दामीना नामक दो गीदडों का वर्णन है।इन दोनों पात्रों के बारे में सर्वप्रथम जानकारी – अलबरूनी ने दी थी। नीला आकाश, मछलीनुमा आंखें, बारहमासा ग्रंथ, कंदब वृक्ष, कोयल व सारस पक्षी, चाकोर पक्षी का चित्रण हुआ है।

2. नाथद्वारा चित्रशैली

- राजसमंद जिले में है। प्राचीन नाम – सिहाडा गाँव
- 10 फरवरी, 1672 में राजसिंह ने श्रीनाथ जी के मंदिर का निर्माण करवाया।
- प्रधान रंगः– हरा + पीला प्रारंभ कालः– राजसिंह स्वर्णकालः– राजसिंह
- पृष्ठ भूमि रंग :– नींबुआ, गुलाबी
- प्रमुख चित्रकार :– बाबा रामचंद्र नारायण, चतुर्भुज, नरोत्तम, हरदेव, देवकृष्ण, घासीराम, तुलसीराम, उदयराम, घनश्याम, विठ्ठलदास, चम्पालाल
- महिला चित्रकार – कमला व ईलायची, रूका देवी
- चित्र – राधाकृष्ण का चित्र, गाय का चित्रण, पिछवाईयों का चित्रण, कृष्ण लीला, केले के वृक्ष का चित्रण, आसमान में देवताओं का अंकन,
- यह एक धार्मिक चित्रशैली है।
- नाथद्वारा चित्रशैली को कृष्ण भक्ति की चित्रशैली कहा जाता है।

3. देवगढ चित्रशैली

- यह राजसमंद का एक ठिकाना है।
- ठिकाने की स्थापना – 1680 ई. द्वारिका प्रसाद के द्वारा।
- इस ठिकाने के शासक/रावत – 16 वें उमराव कहलाते है।
- प्रारंभ कालः– द्वारिका प्रसाद
- स्वर्णकालः– महाराणा जयसिंह
- इस चित्रशैली को प्रकाश में लाने का श्रेय – श्रीधर अंधारे को जाता है।
- मेवाड + मारवाड + ढूंढ़ाड का मिश्रण देवगढ चित्रशैली है। अतः इसे कोकटेल चित्रशैली कहते है।
- इस चित्रशैली में मोतीमहल व अजारा हवेली भित्ति चित्रों का आकर्षण है।
- इस चित्रशैली में हरे व पीले रंग में हाथियों की लडाई, राजदरबार दृश्य मुकुट, नीम्बाला वस्त्र इत्यादि है।
- प्रमुख चित्रकारः– कमल, चौखा, बैजनाथ, कंवला, भगता।

4. चावण्ड चित्रशैली

- यह शैली उदयपुर में है।
- प्रारंभ कालः– महाराणा प्रताप
- स्वर्णकालः– अमरसिंह– प्रथम
- प्रमुख चित्रकारः– निसारदीन/नासिरूद्दीन
- 1592 ई. – ढोला मारू का चित्रण – निसारदीन – प्रताप के काल में।
- 1605 – रागमाला सेट का चित्रण – निसारदीन – अमरसिंह – प्रथम के काल में।

5. बूँदी चित्रशैली

- राजस्थानी चित्रकला के विचारधारा के आरम्भिक केन्द्र।
- प्रधान रंगः– सुनहरा व चटकीला रंग
- प्रारंभ कालः– सुरजन सिंह हाडा
- स्वर्णकालः– उम्मेदसिंह – प्रथम/बिशनसिंह
- प्रमुख चित्रकारः– सूरजन, अहमद, डालू, भीखराम, श्रीकृष्ण
- इस चित्रशैली को पशु–पक्षियों की चित्रशैली कहा जाता है।
- इस शैली में अंग्रेज को अपनी प्रेमिका के साथ पियानो बजाते हुए दर्शाया गया है।
- छत्रसाल ने रंगमहल का निर्माण करवाया था।
- चित्रशाला महल का निर्माण – उम्मेदसिंह – प्रथम ने 1750 ई. में
- इसे भित्ति चित्रों का स्वर्ग कहा जाता है। इसमें उम्मेदसिंह को सूअर का शिकार करते हुए दिखाया (हरे रंग में) गया है।
- भावसिंह के काल में इस चित्रशैली पर भोग विलासिता/पाश्चात्य यूरोप/अंग्रेजी प्रभाव पडा था।
- रत्नसिंह हाडा चित्रकला प्रेमी होने के कारण जहाँगीर द्वारा 'सरबुलंद राय' की उपाधि दी गई थी।
- विशुद्ध राजस्थानी चित्रकला का प्रारम्भ इसी शैली से माना जाता है।
- यह शैली मेवाड चित्रशैली से प्रभावित है।
- इस चित्रशैली में ''रागभैरव'' एवम् ''रागिनी दीपक'' का चित्र चित्रित हुआ।

  ↓ ↓

  इलाहबाद संग्रहालय बनारस संग्रहालय में संग्रहित है।
- भावसिंह के काल में – मतिराम – रसराज ग्रंथ
- अन्य प्रमुख चित्रः– बारहमासा, रागमाला, अन्तःपुर, चक्रदार पायजामा, खजूर वृक्ष, भोगविलास के चित्र चित्रित हुए।

6. कोटा चित्रशैली

- प्रधान रंगः– हल्का नीला
- प्रारंभ कालः– रामसिंह प्रथम (स्वतंत्र अस्तित्व)
- स्वर्णकालः– उम्मेदसिंह– प्रथम
- प्रमुख चित्रकारः– लच्छीराम, नूरमोहम्मद, डालू, रघुनाथ, लालचंद, गोविन्द
- इसे शिकार चित्रशैली भी कहते है।
- भगवान श्रीराम को हरिण का शिकार करते हुए व महिलाओं को शिकार करते हुए दिखाया गया है।
- झाला झालिमसिंह ने – झाला हवेली – भित्ति चित्रों का आकर्षण केन्द्र।
- डालूराम ने 1640 ई. में रागमाला सेट का चित्रण किया था।
- शेर, बतख एवं खजूर एवं मृगनयनि/आम्रपत्रों के समान आँखों का चित्र चित्रित है।
- वल्लभ संप्रदाय का प्रभाव भी देखा जाता है।

7. जैसलमेर चित्रशैली

- प्रधान रंगः– पीला + गुलाबी
- प्रारंभ कालः– हरराय भाटी
- स्वर्णकालः– अखैसिंह
- इस शैली पर किसी बाहरी शैली का प्रभाव नहीं पडा।